IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 2, December 2022
Impact Factor: 6.252

प्रकृति:अन्योन्याश्रित एवं अबबोध

डॉ अमिता जैन

सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग,

जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं, नागौर

amitajainjuly1@gmail.com

सारांश -तीनों गुण सदा सम्मिलित रहते हैं एवं एक दूसरे से अलग नहीं किए जा सकते| ये सदा संयुक्त है| ये एक दूसरे का तिरस्कार भी करते हैं, उपकार भी करते हैं और परस्पर सहयोग करके सारे पदार्थों को उत्पन्न करते हैं| जिस प्रकार दीपक में तेल, बत्ती और ज्वाला परस्पर विरोधी होते हुए भी मिलकर प्रकाश करते हैं| उसी प्रकार ये तीनों गुण परस्पर विरोधी होते हुए भी मिलकर प्रयोजन की सिद्धि के लिए कार्य करते हैं| **जैसे- सत्व गुण** की प्रतीक पतिव्रता सुंदरी अपने पति को सुखी, सपत्नी को दुखी एवं अन्य कामी पुरुष को मोहित करती है| **रजोगुण** का प्रतीक वीर योद्धा युद्ध में अपनी वीरता से अपने लोगों को सुखी, शत्रुओं को दुखी तथा अन्य को मोहित करता है| **तमोगुण** का प्रतीक मेघ आकाश को आच्छादित करके संतप्त लोगों को सुखी, कृषकों को क्रियाशील तथा विरही को विषण्ण करता है|

मूल शब्द- सत्व गुण, रजोगुण, तमोगुण, आहार

सन्दर्भ ग्रन्थ-

[1]. शर्मा, चंद्रधर **(1995).** भारतीय दर्शन:आलोचन और अनुशीलन, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स दिल्ली

[2]. चतुर्वेदी, वृजमोहन **(1998).**सांख्यकारिका, नेशनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली

[3]. आचार्य, महाश्रमण**(2013).**विजयी बनो, जैन विश्व भारती प्रकाशन लाडनूं

[4]. आचार्य, महाश्रमण **(2013).**संपन्न बनो, जैन विश्व भारती प्रकाशन लाडनूं

[5]. आचार्य, महाश्रमण**(2014).**आओ हम जीना सीखें, जैन विश्व भारती प्रकाशन लाडनूं

[6]. आचार्य, महाश्रमण**(2016).**निर्वाण का मार्ग, जैन विश्व भारती प्रकाशन लाडनूं

[7].राजस्थान पत्रिका **17** दिसंबर **2022**